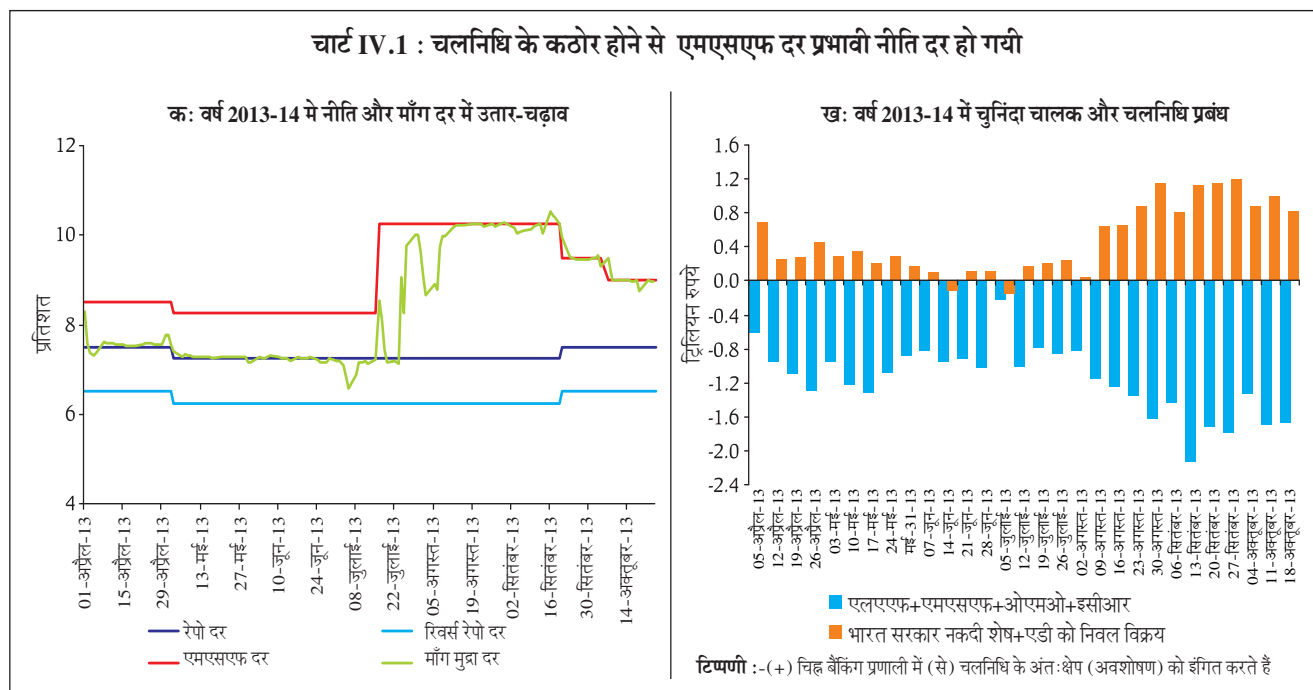


## IV. मौद्रिक एवं चलनिधि स्थिति

मौद्रिक एवं चलनिधि स्थितियों को अपवादात्मक चलनिधि उपायों के माध्यम से कठोर बनाया गया, ताकि विनिमय बाजार दबावों को रोका जा सके और विदेशी मुद्रा बाजार में अस्थिरता को कम किया जा सके। एमएसएफ दर, जिसे जुलाई 2013 में 200 आधार अंक बढ़ाया गया था, प्रभावी नीति दर बन गयी। विनिमय बाजार दबावों के कम होने के साथ, इन उपायों को नपे-तुले ढंग से वापस लिया जा रहा है। कठोरता के होने पर भी स्थायी पुनर्वित्तपोषण सुविधा आश्रय बढ़ाने के अतिरिक्त महत्वपूर्ण प्राथमिक चलनिधि अंतःक्षेप एलएएफ, एमएसएफ और ओएमओ के माध्यम से किया गया। मुद्रा आपूर्ति वृद्धि अधिकतर सांकेतिक प्रक्षेप-पथ के अनुस्यू हुई है। ऋण वृद्धि में मध्य जुलाई से तेजी आयी है, जो अंशतः कारपोरेटों द्वारा वित्तपोषण के मुद्रा बाजार स्रोतों के स्थान पर बैंक ऋण का इस्तेमाल किये जाने के चलते हुआ है। आगे बढ़ते हुए, किये जा रहे मौद्रिक उपायों के सामान्य होने से समष्टिआर्थिक स्थिरता पर ध्यान रखते हुए वृद्धिशील अंशांकन को वृद्धि-संतुलन में मूर्त रूप दिया जायेगा।

रिज़र्व बैंक ने विदेशी मुद्रा में अस्थिरता रोकने के लिए वर्ष 2013-14 की दूसरी तिमाही में चलनिधि को कठोर बनाया, जिससे रुपया निधीयन की लागत बढ़ी

IV.1 युएस फेड के परिमाणात्मक सौकर्य कार्यक्रम को क्रमशः कम किये जाने के संकेत के बाद पूँजी बहिर्वाह में अचानक आयी तेजी के परिणामस्वरूप रुपये के तीव्र मूल्यहास का सामना करते हुए रिज़र्व बैंक ने सुरक्षा की पहली पंक्ति के रूप में अल्पावधि ब्याज दरों में बढ़ोतरी की और घरेलू मुद्रा बाजार की चलनिधि को संपीडित किया। किये गये उपायों में सीमांतिक स्थायी सुविधा (एमएसएफ) दर को 200 आधार अंक (बीपीएस) बढ़ाते हुए 10.25 प्रतिशत करना; दैनिक एलएएफ उधार की अधिकतम सीमा संबंधित बैंकों के एनडीटीएल का 0.5 प्रतिशत निर्धारित करना, जबकि पूर्व में अतिरिक्त एसएलआर धारण पर असीमित पहुँच प्राप्त करने की प्रथा थी; और दैनिक आरक्षित नकदी निधि अनुपात (सीआरआर) की अपेक्षा को बढ़ा कर 70 प्रतिशत से 99 प्रतिशत करना, शामिल था। नकदी प्रबंध बिलों (सीएमबी) की साप्ताहिक नीलामियों का भी संचालन किया गया, ताकि चलनिधि को बाहर निकाला जा सके। इन उपायों से माँग दर एमएसएफ दर की ओर गयी, जिससे एमएसएफ दर नीतिगत आशय के अनुस्यू प्रभावी नीति दर बन गयी (चार्ट IV.1क)।



IV.2 चलनिधि के कठोर होने से एलएएफ (एमएसएफ सहित) के अंतर्गत औसत दैनिक चलनिधि अंतःक्षेप, जो जुलाई 2013 में 526 बिलियन रुपये था वह बढ़ कर सितंबर 2013 में 1,131 बिलियन रुपये हो गया। रिज़र्व बैंक के पास रखे सरकार के नकदी शेष में बढ़ोतरी और अग्रिम कर बहिर्वाह ने भी सितंबर 2013 में चलनिधि की कठोरता में योगदान किया। चलनिधि कठोरता उपायों ने समस्त आय-वक्र को उर्ध्वमुखी बना दिया, जिसमें अल्पावधि में प्रत्यावर्तन नीतिगत उद्देश्य के अनुसूप दिखाई पड़ा। इसने कारपोरेट बांड आय और वाणिज्यिक पत्र (सीपी) बट्टा दरों में भी काफी बढ़ोतरी की अगुआई की। चलनिधि स्थिति को बहुत अधिक कठोर बनाये जाने, जिसके चलते वित्तपोषण स्थिति पर अधिक प्रभाव हो सकता था, से रोकने के लिए रिज़र्व बैंक ने अगस्त 2013 में दो ओएमओ खरीद नीलामियों का संचालन किया, जिससे 125 बिलियन रुपये की प्राथमिक चलनिधि का अंतःक्षेप हुआ (चार्ट IV.1ख)। 247 बिलियन रुपये की अतिरिक्त चलनिधि का अंतःक्षेप भी अस्थायी आधार पर किया गया, जिसके लिए शनिवार (14 सितंबर 2013) को एमएसएफ के माध्यम से बैंकों को दो-दिवसीय निधियाँ प्रदान की गयीं, ताकि वे अग्रिम कर बहिर्वाह के प्रभाव को रोक सकें।

**अपवादात्मक चलनिधि उपायों को नपे-तुले ढंग से वापस लिया जा रहा है, क्योंकि विनिमय दर दबावों में कमी आयी है**

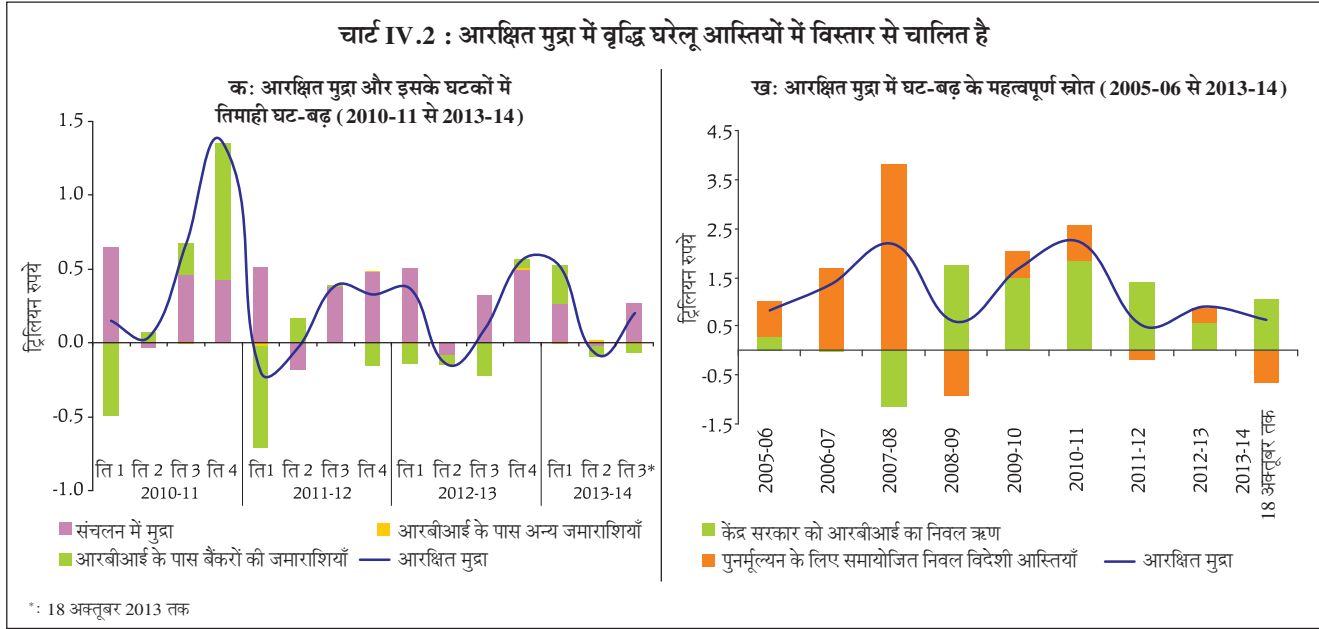
IV.3 सितंबर 2013 से विनिमय दर दबावों के कम होने को और विकसित होती समष्टिआर्थिक स्थितियों को ध्यान में रख कर रिज़र्व बैंक अपनी मध्य तिमाही मौद्रिक नीति समीक्षा (20 सितंबर 2013) में मौद्रिक उपायों को सामान्य बनाने की दिशा में अग्रसर हुआ। निधियों की लागत को कम करने के लिए इसने एमएसएफ दर को 75 आधार अंक घटा कर 9.5 प्रतिशत कर दिया। बैंकों द्वारा बनाये रखे गये न्यूनतम दैनिक सीआरआर शेष को 99 प्रतिशत से घटा कर 95 प्रतिशत किया गया, ताकि बैंकों को नमनीयता दी जाये, जिससे कि वे अपनी चलनिधि स्थिति का बेहतर प्रबंध कर सकें। तथापि, मुद्रास्फीति जोखिम को ध्यान में रखते हुए, रेपो दर को 25 आधार अंक बढ़ा कर 7.5 प्रतिशत किया गया। रिज़र्व बैंक ने अपने इस आशय का भी संकेत दिया कि वह मौद्रिक नीति के परिचालन को सामान्य बनाना चाहता है और एलएएफ रेपो

दर को परिचालनीय नीति ब्याज दर के रूप में प्रत्यावर्तित करना चाहता है।

IV.4 चूँकि वित्तीय बाजार की स्थिति स्थिर बनी रही, अतः एमएसएफ दर को पुनः 50 आधार अंक घटा कर 7 अक्टूबर 2013 से 9.0 प्रतिशत किया गया। पर्याप्त चलनिधि की उपलब्धता के संबंध में रिज़र्व बैंक के आश्वासन के अनुक्रम में एक ओएमओ खरीद नीलामी का संचालन 7 अक्टूबर 2013 को किया गया, जिससे लगभग 100 बिलियन रुपये का अंतःक्षेप हुआ। एक अतिरिक्त चलनिधि बढ़ोतरी करने के उपाय के रूप में और मीयादी मुद्रा बाजार को विकसित करने के लिए रिज़र्व बैंक ने बैंकिंग प्रणाली के एनडीटीएल के 6.25 प्रतिशत की समतुल्य राशि के लिए 7-दिवसीय और 14-दिवसीय स्वस्व वाले साप्ताहिक परिवर्ती दर मीयादी रेपो की शुल्कात की। इसके परिणामस्वरूप, रिज़र्व बैंक से निधियों तक कुल पहुँच बढ़ कर एनडीटीएल के 1.25 प्रतिशत (अर्थात्, लगभग 1 ट्रिलियन रुपये) हो गयी, जिसमें एनडीटीएल का 0.5 प्रतिशत ओवरनाइट रेपो के अंतर्गत, एनडीटीएल का 0.5 प्रतिशत निर्यात ऋण पुनर्वित्त (इसीआर) सुविधा के अंतर्गत और एनडीटीएल का 0.25 प्रतिशत मीयादी रेपो के अंतर्गत था। बैंक चलनिधि की किसी अतिरिक्त माँग को एमएसएफ के माध्यम से भी पूरा कर सकते हैं। 7-दिवसीय मीयादी रेपो का पहला दौर 11 अक्टूबर 2013 से संचालित किया गया (190 बिलियन रुपये), जिसके बाद 18 अक्टूबर 2013 को 14-दिवसीय मीयादी रेपो का संचालन किया गया (195 बिलियन रुपये)। इन उपायों के परिणामस्वरूप अक्टूबर 2013 में चलनिधि की स्थिति सहज हो गयी।

**आरक्षित मुद्रा वृद्धि को प्राथमिक चलनिधि के अंतःक्षेप से बढ़ावा मिला**

IV.5 आरक्षित मुद्रा वृद्धि में हाल के महीनों में तेजी आयी और वह अक्टूबर के मध्य में वाइ-ओ-वाइ 8 प्रतिशत हो गयी, जबकि सीआरआर परिवर्तनों के लिए समायोजित हो कर यह लगभग 10 प्रतिशत हुई। एलएएफ, एमएसएफ और ओएमओ के माध्यम से चलनिधि के अंतःक्षेप से केंद्र सरकार को रिज़र्व बैंक के निवल ऋण में बढ़ोतरी होने में सहायता मिली। यद्यपि स्रोत पक्ष में निवल विदेशी आस्तियों (पुनर्मूल्यन के लिए समायोजित) में वर्ष के दौरान गिरावट दर्ज की गयी, इसमें अधिक समंजन केंद्र को रिज़र्व बैंक के निवल ऋण में बढ़ोतरी द्वारा किया गया (चार्ट IV.2)।



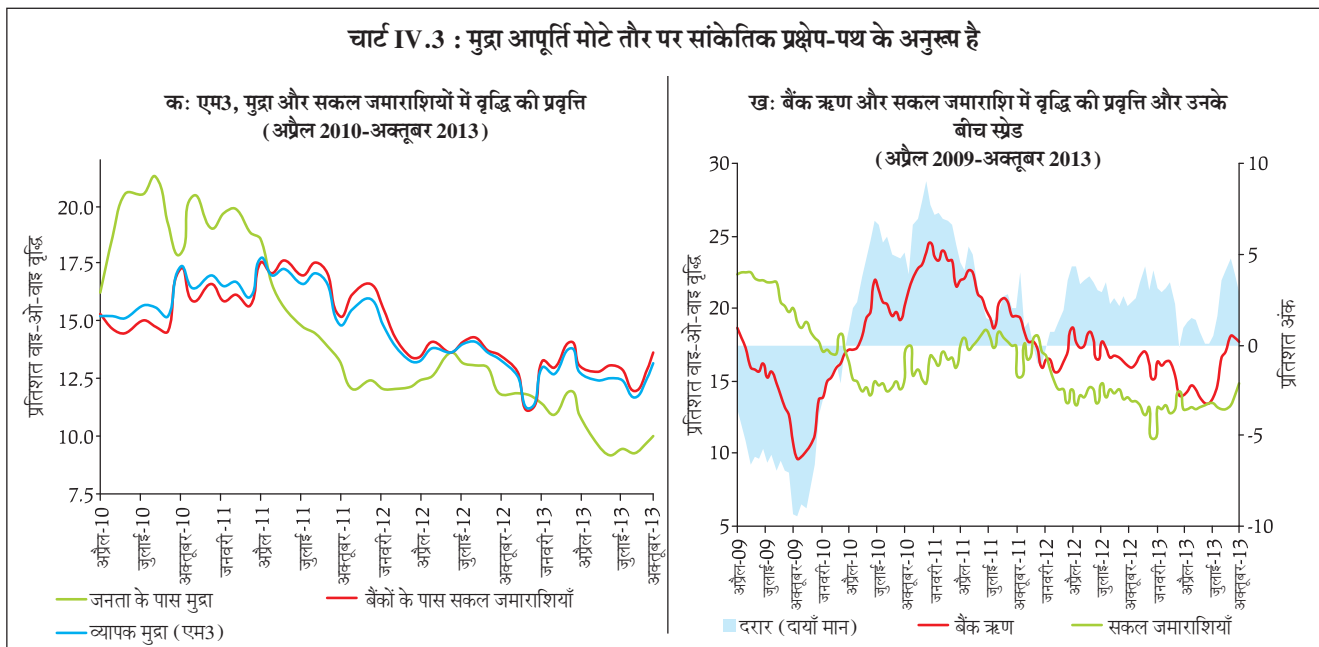
**व्यापक मुद्रा की वृद्धि प्रक्षेप-पथ के अनुस्यू है**

IV.6 मुद्रा आपूर्ति में वृद्धि वर्ष 2012-13 की पहली छमाही में 12.5 प्रतिशत वाइ-ओ-वाइ के इर्द-गिर्द रही, जो मोटे तौर पर वर्ष 2013-14 के लिए 13 प्रतिशत के सांकेतिक प्रक्षेप-पथ के अनुस्यू थी और वर्तमान में यह 13.2 प्रतिशत है (4 अक्टूबर 2013)। मुद्रा प्रसार, जो वर्ष 2013-14 की पहली छमाही में कम हुआ था, उसमें अक्टूबर में तेजी आयी है, जो त्योहारी माँग को प्रतिबिंबित करता है (चार्ट IV.3क)। स्रोत पक्ष में, वाणिज्यिक क्षेत्र को बैंक ऋण में दूसरी तिमाही के

मध्य से तेजी आयी (सारणी IV.1)। फलतः, बैंक ऋण में वृद्धि और अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों (एससीबी) की सकल जमाराशि के बीच दरार दूसरी तिमाही के अंत में लगभग 4 प्रतिशत अंक विस्तारित हो गयी (चार्ट IV.3ख)।

**ऋण के उठाव में बढ़ोतरी आती है, जिसमें कारपोरेटों द्वारा बैंक वित्त का आश्रय अधिक लिया गया**

IV.7 खाद्येतर ऋण-वृद्धि, जो 12 जुलाई 2013 को 14 प्रतिशत वाइ-ओ-वाइ थी, वह बढ़ कर 4 अक्टूबर 2013 को 17.9 प्रतिशत हो गयी, जो उल्लेखनीय रूप से 15



सारणी IV.1: मौद्रिक संकेतक

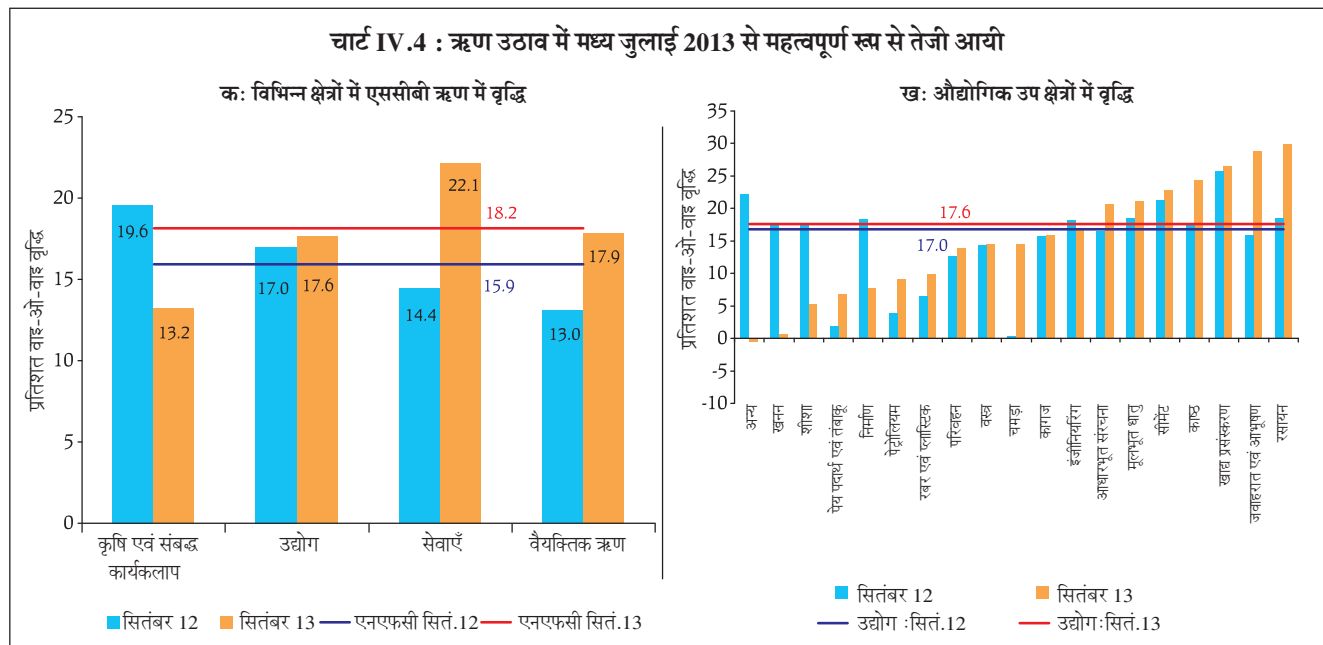
मद	बकाया राशि ( बिलियन रुपये) 04 अक्टूबर 13	वित्त-वर्ष घट-बढ़ ( प्रतिशत)		वर्ष-दर-वर्ष घट-बढ़ ( प्रतिशत)	
		2012-13	2013-14	05-अक्तू-12	04-अक्तू-13
1	2	3	4	5	6
आरक्षित मुद्रा ( एम <sub>0</sub> )	15,793.3	2.5	4.3	5.3	8.0
आरक्षित मुद्रा ( समायोजित)		3.6	4.0	12.4	9.9
व्यापक मुद्रा ( एम <sub>3</sub> )	89,748.7	7.7	7.1	13.6	13.2
एम <sub>3</sub> के मुख्य घटक					
जनता के पास मुद्रा	11,602.9	3.1	1.4	11.1	10.1
सकल जमाराशियाँ	78,108.7	8.4	8.0	14.0	13.7
जिसमें: माँग जमाराशियाँ	7,605.0	-2.5	1.8	5.5	9.7
मीयादी जमाराशियाँ	70,503.7	9.8	8.7	15.0	14.1
एम <sub>3</sub> के मुख्य स्रोत					
सरकार को निवल बैंक ऋण	29,518.3	9.0	9.0	19.0	14.2
वाणिज्यिक क्षेत्र को बैंक ऋण	60,468.6	4.8	6.7	16.2	16.4
बैंकिंग क्षेत्र की निवल विदेशी आस्तियाँ	16,936.9	-0.2	3.5	-0.4	9.9

टिप्पणी : 1. आँकड़े अर्न्ततम हैं  
2. आरक्षित मुद्रा के आँकड़े 18 अक्टूबर 2013 से संबंधित हैं।

प्रतिशत के सांकेतिक प्रक्षेप-पथ से ऊँची थी। यह प्रवृत्ति अंशतः कारपोरेट फर्मों द्वारा समर्थित थी, जिन्होंने विशेष रूप से सीपी के माध्यम से लिये गये बाजार उधार के स्थान पर बैंक उधार का इस्तेमाल किया (सारणी IV.2)। यह परिवर्तन इसलिए हुआ, क्योंकि सीपी पर बढ़ा दर सहित मुद्रा बाजार दरें दृढ़ हो गयीं और प्राथमिक बाजार की स्थिति सुस्त बनी रही।

IV.8 निस्तेज घरेलू वातावरण को देखते हुए बैंकों के लिए यह आवश्यक है कि वे ऋण देते समय बेहतर ऋण-प्रबंध प्रथाएँ सुनिश्चित करें, जिसमें उन्हें अपनी आस्ति गुणवत्ता पर सतर्क नजर रखनी चाहिए। सभी बैंकों में बड़े सामान्य एक्सपोजरों का मिलान करने और ऋण रजिस्ट्री आँकड़े उपलब्ध कराने के लिए रिजर्व बैंक द्वारा की गयी पहल से इस समस्या का निराकरण होने की उम्मीद है।

चार्ट IV.4 : ऋण उठाव में मध्य जुलाई 2013 से महत्वपूर्ण स्त्र से तेजी आयी



## सारणी IV.2: वाणिज्यिक क्षेत्र को संसाधन प्रवाह में बैंकिंग स्रोतों की प्रधानता है

(बिलियन रुपये)

1	अप्रैल-मार्च		अप्रैल 1 से अक्टूबर 4	
	2011-12	2012-13	2012-13	2013-14
1	2	3	4	5
<b>ए. समायोजित खाद्येतर बैंक ऋण</b>	<b>6,773</b>	<b>6,849</b>	<b>2,177</b>	<b>3,905</b>
i) खाद्येतर ऋण	6,527	6,335	1,919	4,036
जिसमें: पेट्रोलियम और उर्वरक ऋण	116	141	-88	-111 \$
ii) एससीबी द्वारा गैर एसएलआर निवेश	246	514	257	-131
<b>बी. बैंकेतर संस्थाओं से प्रवाह (बी1+बी2)</b>	<b>5,383</b>	<b>7,335</b>	<b>3,267</b>	<b>2,365</b>
<b>बी1. घरेलू स्रोत</b>	<b>3,079</b>	<b>4,212</b>	<b>2,289</b>	<b>1,440</b>
1. गैर वित्तीय संस्थाओं द्वारा सार्वजनिक निर्गम	145	119	63	32 ^
2. गैर वित्तीय संस्थाओं द्वारा सकल प्राइवेट प्लेसमेंट	558	1,038	268	305 *
3. बैंकेतर संस्थाओं द्वारा अभिदत्त सीपी का निवल निर्गम	36	52	898	147 &
4. आवास वित्त कंपनियों द्वारा निवल ऋण	539	859	230	267 \$
5. आरबीआई द्वारा विनियमित 4 एआइएफआइ-नाबार्ड, एनएचबी, सिडबी और एक्जिम बैंक द्वारा सकल निभाव	469	515	71	116 ^
6. जमा ग्रहण नहीं करने वाली सर्वांगी महत्वपूर्ण एनबीएफसी (बैंक ऋण को घटा कर)	912	1,188	618	484 #
7. एलआइसी द्वारा कारपोरेट ऋण, आधारभूत संरचना और सामाजिक क्षेत्र में निवल निवेश	419	441	141	89 \$
<b>बी2. बाह्य स्रोत</b>	<b>2,304</b>	<b>3,123</b>	<b>978</b>	<b>925</b>
1. बाह्य वाणिज्यिक उधार/एफसीसीबी	421	466	88	181 ^
2. एडीआर/जीडीआर निर्गम, जिसमें बैंक और वित्तीय संस्थाएँ शामिल नहीं हैं	27	10	10	1 ^
3. विदेश से अल्पावधि ऋण	306	1,177	291	137 *
4. भारत में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश	1,550	1,470	589	606 \$
<b>सी. संसाधनों का कुल प्रवाह (ए+बी)</b>	<b>12,156</b>	<b>14,184</b>	<b>5,443</b>	<b>6,270</b>
<b>ज्ञापन: म्युचुअल फंडों द्वारा ऋण (नॉन गिल्ट) योजनाओं के माध्यम से निवल संसाधन संग्रहण</b>	-185	830	500	230 ^

\$ : अगस्त 2013 तक ^ : सितंबर 2013 तक \* : जून 2013 तक &amp; : मध्य सितंबर 2013 तक # : जुलाई 2013 तक

## ऋण वृद्धि व्यापक हुई, सभी क्षेत्रों में तेजी आयी

क्षेत्र और वैयक्तिक ऋण (विशेष रूप से आवास ऋण) में

IV.9 चुनिंदा एससीबी के सकल खाद्येतर ऋण के क्षेत्रवार अभिनियोजन के संबंध में आँकड़े बताते हैं कि उद्योगों, सेवा

भी बढ़ोतरी हुई है (चार्ट IV.4क)। समग्र औद्योगिक ऋण-वृद्धि (वाइ-ओ-वाइ) अंत-सितंबर 2013 में 17.6 प्रतिशत

## सारणी IV.3: बैंकों की जमा और उधार दरों में वर्ष 2013-14 की दूसरी तिमाही में बढ़ोतरी दर्ज की गयी

(प्रतिशत)

मद	मार्च-12	जून-12	सितंबर-12	दिसंबर-12	मार्च-13	जून-13	सितंबर-13#
1	2	3	4	5	6	7	8
<b>1. घरेलू जमा दर (1-3 वर्षीय स्वरूप की)</b>							
i) सरकारी क्षेत्र के बैंक	9.00-9.75	8.75-9.50	8.50-9.30	8.50-9.10	8.75-9.10	8.00-9.10	8.00-9.50
ii) निजी क्षेत्र बैंक	8.00-10.50	8.00-10.00	8.00-9.75	8.00-9.75	8.00-9.65	8.50-9.50	8.50-10.00
iii) विदेशी बैंक	3.50-9.75	3.50-9.75	3.50-9.75	3.50-9.75	3.50-9.60	3.60-9.88	3.50-11.00
<b>एससीबी की रूपात्मक जमा दर (सभी स्वरूप की)</b>	<b>7.42</b>	<b>7.40</b>	<b>7.29</b>	<b>7.33</b>	<b>7.31</b>	<b>7.26</b>	<b>7.46</b>
<b>2. आधार दर</b>							
i) सरकारी क्षेत्र के बैंक	10.00-10.75	10.00-10.50	9.75-10.50	9.75-10.50	9.70-10.25	9.70-10.25	9.80-10.25
ii) निजी क्षेत्र बैंक	10.00-11.25	9.75-11.25	9.75-11.25	9.70-11.25	9.70-11.25	9.60-11.25	9.80-11.50
iii) विदेशी बैंक	7.38-11.85	7.38-11.85	7.25-11.75	7.20-11.75	7.20-14.50	7.20-14.00	6.70-14.00
<b>एससीबी की रूपात्मक आधार दर</b>	<b>10.75</b>	<b>10.50</b>	<b>10.50</b>	<b>10.50</b>	<b>10.25</b>	<b>10.25</b>	<b>10.25</b>
<b>3. भारत औसत उधार दर (डब्ल्यूएलआर)*</b>							
i) सरकारी क्षेत्र के बैंक	12.70	12.41	12.34	12.23	12.18	12.10	12.10
ii) निजी क्षेत्र बैंक	12.31	12.42	12.32	12.14	12.13	12.10	12.17
iii) विदेशी बैंक	11.86	12.00	11.64	11.51	12.10	12.24	12.66
<b>एससीबी की डब्ल्यूएलआर</b>	<b>12.58</b>	<b>12.39</b>	<b>12.30</b>	<b>12.18</b>	<b>12.16</b>	<b>12.11</b>	<b>12.15</b>

# : डब्ल्यूएलआर के संबंध में आँकड़े अगस्त 2013 के हैं \* : तिमाही के अंत में बकाया ऋण पर आधारित

टिप्पणी : डब्ल्यूएलआर के संबंध में आँकड़े अंतिम हैं

पर थी, जिसमें मूलभूत धातुएँ, रसायन, आधारभूत संरचना, सीमेंट, जवाहरात और आभूषण, काष्ठ और खाद्य प्रसंस्करण जैसे क्षेत्रों में वृद्धि उद्योग-औसत वृद्धि से अधिक थी (चार्ट IV.4ख)।

IV.10 रिज़र्व बैंक द्वारा एमएसएफ के अंतर्गत उधार की लागत बढ़ाये जाने से, भले ही एलएएफ रेपो के अंतर्गत निभाव की उपलब्धता को प्रतिबंधित किया गया, रूपात्मक जमा दर दूसरी तिमाही के दौरान 20 आधार अंक (वाइ-ओ-वाइ) बढ़ी (सारणी IV.3)। यह बढ़ोतरी मुख्यतः 180 दिनों की अल्पावधि परिपक्वता के संबंध में थी, जो चलनिधि स्थिति को कठोर किये जाने को प्रतिबिंबित करती है। हालाँकि रूपात्मक आधार दर दूसरी तिमाही के दौरान 10.25 प्रतिशत पर अपरिवर्तित रही, बकाया बैंक ऋणों पर भारित औसत उधार दर (डब्लूएएलआर) अगस्त 2013 में सीमांतिक रूप से 4 आधार अंक (क्यू-ओ-क्यू) बढ़ कर 12.15 प्रतिशत हो गयी। बैंकों द्वारा स्वीकृत किये गये नये स्मया ऋणों पर डब्लूएएलआर में अगस्त 2013 में 42 आधार अंकों की तेज वृद्धि होकर वह 12.04 प्रतिशत हो गयी, जबकि जून 2013 में वह 11.62 प्रतिशत पर थी।

**अपवादात्मक उपायों को सामान्य किया जा रहा है, आगे परिवर्तनों का अनुकूलन उच्च मुद्रास्फीति और न्यून वृद्धि की चुनौतियों द्वारा किया जायेगा**

IV.11 अभूतपूर्व विनिमय दर दबावों के चलते किये गये अपवादात्मक चलनिधि और मौद्रिक नीतिगत उपायों को अंशतः मध्य तिमाही मौद्रिक नीति समीक्षा करते समय 20 सितंबर को और पुनः 7 अक्टूबर 2013 को वापस लिया गया। इन दोनों युक्तियों ने प्रभावी नीति दर को 125 आधार अंक कम किया। रिज़र्व बैंक ने अपने आश्वासनों के अनुरूप कालक्रमानुसार एलएएफ, एमएसएफ और ओएमओ के माध्यम से भी पर्याप्त चलनिधि सुनिश्चित की है। फलतः, आधार मुद्रा वृद्धि में भी तेजी आयी है। मौद्रिक उपायों को सामान्य बनाये जाने की प्रक्रिया के अग्रसर होने के साथ, आगे की मौद्रिक नीति इस बात पर निर्भर करेगी कि किस प्रकार से वृद्धि-मुद्रास्फीति का गति-सिद्धांत विकसित होता है। सीपीआइ मुद्रास्फीति के बने रहने और शिथिल वृद्धि। स्थितियों को भी ध्यान में रखते हुए चलनिधि स्थिति को युक्तियुक्त स्तर पर बनाये रखना होगा।